CBSE Class 10

Hindi A

Sample Paper - 09

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न-पत्र भें चार खंड हैं - क, ख, ग औय घ ।
- सबी खंडों के प्रशनों उत्तर देना अनिवार्य हैं।
- यथासंभव् प्रत्येक खंड के प्रशनों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रशनों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंको के प्रशनों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (10)**

   सड़क मार्ग से हम आगे बढ़े और सरयू पुल पर से बस्ती जिले की सीमा में प्रवेश किया। हमारा पहला पड़ाव कुशीनगर था मगर हम कुछ देर मगहर में रुके जो कबीर की निर्वाण भूमि है मगर लोगों की फिरकापरस्ती ने उनकी सारी मेहनत पर पानी फेर दिया है और उन्हें मंदिर और मकबरे में बाँट दिया है। मठ के महंत ने हमारे भोजन की व्यवस्था की और आस-पास के स्कूल और कॉलेज की लड़कियों से मुलाकात भी कराई। उनसे बातचीत कर के हमने जाना कि अब स्थितियाँ बदल गई हैं अब लड़कियों की पढ़ाई और नौकरी पर ध्यान दिया जाता है मगर उनमें सामाजिकता का लोप सा हो गया है अब ब्याह और मरनी-हरनी में एका नजर नहीं आता। गीतों की बात चली तो वहाँ मौजूद पचास-साठ लड़कियों में से किसी को भी लोकगीत याद नहीं थे।

   वहाँ से हम कुशीनगर पहुँचे। रात घिरने लगी थी मगर हम पंडरी गाँव के लोगों से मिले। कुशीनगर से लगभग बीस किलोमीटर होने पर भी यहाँ विकास का एक कण भी नहीं पहुँचा था मगर यहाँ के युवा सजग हैं, वे स्वप्रयास से स्कूल भी चलाते हैं। रात को हम बौद्ध मठ में ठहरे। यह मठ किसी शानदार विश्रामगृह से कम नहीं था। सुबह हम केसरिया गाँव गए। सामाजिक और पारिवारिक विघटन के इस दौर में एकमात्र संयुक्त परिवार वहाँ मिला। हमने उनसे बात की। उस परिवार की सबसे बुजुर्ग महिला के पास तीज-त्योहार, गीत-गवनई की अनुपम थाती थी मगर उनसे सीखने वाला कोई नहीं था। नई पीढ़ी लोक संस्कृति से विरत थी।

   i. कबीर की निर्वाण भूमि कौन-सी है?
   ii. कबीर की किस मेहनत पर पानी फिर गया था?
   iii. वर्तमान में मगहर की स्थितियों में क्या बदलाव आ चुका है?

iv. लेखक ने पंडरी गाँव की क्या विशेषता बताई?
v. केसरिया गाँव में मिले एकमात्र संयुक्त परिवार के बारे में लेखक को क्या पता चला?
vi. उपरोक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

Section B

2. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**

i. सभा में दिया गया मेरा भाषण अखबारों में छप गया। (मिश्र वाक्य बनाइए।)
ii. मूर्तिकार मूर्ति बनाने के साथ पढ़ाता भी है। (संयुक्त वाक्य में बदलिए।)
iii. वह ऐसे बोल रहा था जैसे कोई बड़ा अधिकारी हो। (वाक्य-भेद लिखिए।)
iv. प्रतिस्पर्धा में प्रथम आने वाले छात्र को बुलाओ। (मिश्र वाक्य बनाइए।)

3. **निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए- (4)**

i. सभी लोगों ने नृत्य का आनंद उठाया। (कर्मवाच्य में)
ii. क्रिसमस 25 दिसंबर को मनाया जाता है।(कर्तृवाच्य में)
iii. हम इतना भार नहीं सह सकते। (भाववाच्य में)
iv. दिनभर कैसे बैठा जाएगा। (कर्तृवाच्य में)

4. **रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए- (4)**

i. असली परीक्षा <u>अब</u> थी।
ii. जो <u>दायित्व</u> मुझे सौंपा गया था।
iii. उसके लिए <u>मैं</u> सक्षम हूँ।
iv. उसको लेकर <u>गहरा</u> संदेह मेरे भीतर था।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **(4)**

i. 'वीर' रस का एक उदारहण लिखिए।
ii. 'निर्वेद' किस रस का स्थायी भाव है?
iii. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में रस पहचान कर लिखिए-
एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय।
विकल बटोही बीच ही परयो मुरछा खाय।।
iv. 'करुण रस' का स्थायी भाव क्या है?
v. घृणित वस्तुओं को देखकर अथवा उनके बारे में सुनकर मन में जो भाव उत्पन्न होता है, उससे किस रस की व्युत्पत्ति होती है?

6. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (6)**

इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी, पर अर्थ नहीं और शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अंह उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्त्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कंपाती-थरथराती रहती थीं। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूंदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

i. मन्नू के पिता का स्वभाव शक्की क्यों हो गया था?
ii. पहले इन्दौर में उनकी आर्थिक स्थिति कैसी रही होगी?
iii. मन्नू भंडारी के पिता की गिरती आर्थिक स्थिति का उन पर क्या प्रभाव पड़ा?

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: (8)

i. बालगोबिन भगत पतोह के पुनर्विवाह के रूप में समाज की किस समस्या का समाधान प्रस्तुत करना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

ii. 'लखनवी अंदाज़' पाठ के नवाब साहब पतनशील सामन्ती वर्ग के जीते-जागते उदाहरण हैं। टिप्पणी लिखिए।

iii. फादर जैसे सौम्य तथा स्नेहिल स्वभाव के व्यक्ति किस सवाल पर झुजला उठते थे और क्यों ? 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

iv. हालदार साहब इतनी सी बात पर भावुक क्यों हो गए?

v. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल-ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

8. **निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (6)**

तार सप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज़ में राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढाँढस बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
कभी-कभी वह यों ही देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है।
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग ।

i. 'तार सप्तक' से कवि का क्या अभिप्राय है?

ii. कवि संगतवार के किस व्यवहार को उसकी मनुष्यता मानता है और क्यों?

iii. संगतकार मुख्य गायक की सहायता कैसे करता है?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

    i. "घर घेर घोर गगन तथा काले धुंघराले" शब्द चित्र को 'उत्साह' कविता के आधार पर अपने शब्दों में स्पष्ट कर समझाइए।।

    ii. फसल से क्या तात्पर्य है ?

    iii. छाया छूने से कवि का क्या तात्पर्य है? इसे छूने से क्यों मना किया है?

    iv. कविता में माँ ने बेटी को अपने चेहरे पर न रीझने की सलाह क्यों दी है?

    v. कृष्ण जी ने उद्धव को योग का संदेश लेकर गोपियों के पास क्यों भेजा ?

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **(6)**

    i. माता का ऑचल पाठ में ग्राम्य संस्कृति के जिस रूप का चित्रण है- वह आधुनिक युग में पर्याप्त अंशों में परिवर्तित हो चुका है। परिवर्तित रूप से कुछ उदाहरण देते हुए इस कथन के समर्थन में अपने विचार लिखिए।

    ii. नई दिल्ली में सब था- सिर्फ नाक नहीं थी। इस कथन के माध्यम से जॉर्ज पंचम की नाक पाठ का लेखक क्या कहना चाहता है?

    iii. आप किसी पर्वतीय स्थल पर घूमने गए थे। व्यावसायिक गतिविधियों से प्रभावित जीवन मूल्यों वाले उस क्षेत्र के दर्द को एक लेख के रूप में लिखिए। (साना-साना हाथ जोड़ि)

Section C

11. **मेक इन इण्डिया** विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। **(10)**

- प्रस्तावना,
- उक्ति का अर्थ,
- सोने की चिड़िया भारत की पृष्ठभूमि,
- ऊद्यमी देश पराधीनता काल में बदला परिदृश्य,
- विकास में अग्रसर होने का संकल्प,
- उपसंहार।

OR

किसी मैच का आँखों देखा वर्णन विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए।

- टीमों का मैदान में आना
- मैच का संघर्षपूर्ण आरम्भ
- दूसरे दल का आक्रमण
- डी ए वी. के दो गोल
- रोमांचक अन्त।

OR

प्रकृति का प्रकोप विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

- प्रकृति का दानव स्वरूप,
- कारण,
- समाधान।

12. निकटस्थ डाकपाल को पत्र लिखकर सूचित कीजिए कि 1 फरवरी से 28 फरवरी तक आपकी डाक डाकघर में ही सँभाली जाए, क्योंकि उन दिनों आप घर पर नहीं होंगे। **(5)**

OR

अपने प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर अनुरोध कीजिए कि ग्रीष्मावकाश में विद्यालय में रंगमंच प्रशिक्षण के लिए एक कार्यशाला राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से आयोजित की जाए। इसकी उपयोगिता भी लिखिए।

13. किसी **इंडक्शन चूल्हे** का विज्ञापन 25-50 शब्दों में तैयार कीजिए। **(5)**

OR

किसी शीतल पेय की बिक्री बढ़ाने वाला एक विज्ञापन तैयार कीजिए। (25-50 शब्दों में).

CBSE Class 10 - Hindi A
Sample Paper - 09

Answer
Section A

1. i. कबीर की निर्वाण भूमि कुशीनगर के पास स्थित मगहर नामक स्थान है जहाँ के विषय में मान्यता थी कि वहाँ मरना अशुभ है| इसी मान्यता को गलत सिद्ध करने के लिए कबीरदास जी अपने अंतिम समय में काशी से मगहर आ गए थे।
   ii. लोगों को सांप्रदायिक भेदभाव से ऊपर उठाने के कबीर के प्रयास पर पानी फिर गया था और उनकी मृत्यु के बाद वे हिन्दू- मुस्लिम में बंट गए।
   iii. वर्तमान में वहाँ की स्थितियाँ बदल गई हैं, लड़कियों की पढ़ाई और नौकरी पर ध्यान दिया जाने लगा है लेकिन सामाजिक एकता का लोप होने लगा है, अब ब्याह और मरनी-हरनी में भी पहले जैसी एकता नजर नहीं आती।
   iv. कुशीनगर के अत्यंत निकट होने के बावजूद पंडरी गाँव में कोई विकास नहीं हुआ है लेकिन वहाँ के युवा सजग हैं और वे स्वप्रयास से स्कूल भी चलाते हैं अर्थात अगर वर्तमान सजग है तो भविष्य बेहतर अवश्य होगा।
   v. लेखक को पता चला कि उस संयुक्त परिवार की सबसे बुजुर्ग महिला के पास तीज-त्योहार, गीत-गवनई के अनुपम धरोहर थी लेकिन नई पीढ़ी इसे सीखने में रुचि नहीं रखती थी अथवा उन रीति -रिवाजों और परम्पराओं का निर्वाह करने वाला कोई नहीं था।
   vi. कुशीनगर की यात्रा

Section B

2. i. जो भाषण मैंने सभा में दिया था वह अखबारों में छप गया।
   ii. मूर्तिकार मूर्ति बनाता है और उसके साथ पढ़ाता भी है।
   अथवा
   मूर्तिकार मूर्ति बनाने के अलावा पढ़ाता भी है।
   iii. दिया गया वाक्य मिश्र वाक्य है। (क्रिया विशेषण)
   iv. जो छात्र प्रतिस्पर्धा में प्रथम आया है उसे बुलाओ।
3. i. सभी लोगों द्वारा नृत्य का आनंद उठाया गया।
   ii. क्रिसमस 25 दिसंबर को मनाते हैं।
   iii. हमसे इतना भार नहीं सहा जाता।
   iv. दिनभर कैसे बैठेंगे।
4. i. **अब-** क्रियाविशेषण, कालवाचक, 'थी' क्रिया की विशेषता।
   काल वाचक क्रिया विशेषण, विशेष्य- 'थी'।
   ii. **दायित्व-** भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक।

iii. **मैं-** पुरुषवाचक सर्वनाम,पुल्लिंग/स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकारक।
पुरुषवाचक सर्ववनाम, उत्तम पुरुष ,एकवचन, पुल्लिंग/ स्त्रीलिंग, कर्ता कारक।

iv. **गहरा-** गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, 'संदेह' की विशेषता।

5. i. तनकर भाला यूँ बोल उठा
राणा! मुझको विश्राम न दें।
मुझको वैरी से हृदय-क्षोभ
तू तनिक मुझे आराम न दे।

ii. 'निर्वेद' शांत रस का स्थायी भाव है। "अब लौ नसानी अब न नसैहौं। राम कृपा भव निशा सिरानी जागे फिरि न डसैहों।
पायों नाम चारु चिंतामणी उर कर ते न खसैहों।
श्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी चित्त कंचनहिं कसैहों। परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन निज बस ह्वै न हँसैहों। मन मधुकर पन करि 'तुलसी' रघुपति पद कमल बसैहों।"

iii. भयानक रस (मुरछा खाय)

iv. 'करुण रस' का स्थायी भाव 'शोक' है। "सोक विकल सब रोवहिं रानी। रूप सीलु बल तेज बखानी ।।
करहिं विलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमितल बारहिं बारा।।"

v. वीभत्स रस।

Section C

6. i. मन्नू के पिता पिता का स्वभाव के शक्की हो जाने का कारण अपनों के हाथों मिला विश्वासघात, उनका अहं, सिकुड़ती आर्थिक स्थिति और अधूरी महत्त्वकाक्षाएँ थीं।

ii. पहले इन्दौर में लेखिका के पिता की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी और नवाबी ठाठ-बाट से थे। वे समाज के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रोंप में जाने जाते थे।

iii. गिरती आर्थिक स्थिति के कारण मन्नू भंडारी के पिता पर यह प्रभाव पड़ा कि वह बहुत चिड़चिड़े, शक्की और क्रोधी स्वभाव के हो गए, परिणामस्वरूप उनके व्यक्तित्व के सकारात्मक गुण समाप्त हो गए।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

i. हमारे समाज में विधवा विवाह को शास्त्र सम्मत नहीं समझा जाता | लोग इसे स्वीकृति नहीं देते | बालगोबिन भगत इस प्रकार की प्रत्येक रूढ़िवादिता के विरोधी थे | उनकी मान्यता थी कि विधवा को भी अपना जीवन जीने का पूर्ण अधिकार है | भगत के द्वारा अपनी पतोहू के पुनर्विवाह के रूप में समाज की इसी समस्या का समाधान लेखक ने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है |

ii. 'लखनवी अंदाज़' पाठ के नवाब साहब पतनशील सामंती वर्ग के जीते-जागते उदाहरण हैं | वास्तविकता से बेखबर, बनावटी जीवन शैली जीने वाले नवाब साहब ने ट्रेन में लेखके की संगति के प्रति कोई उत्साह नहीं दिखाया | खानदानी रईस बनने का अभिनय करते हुए खीरा खाने में भी वे नजाकत दिखाते हैं और उसे सूंघने मात्र से पेट भरने की झूठी तुष्टि करते हैं |

iii. फादर जैसे सौम्य तथा स्नेहिल स्वभाव के व्यक्ति हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के मार्ग में आने वाली समस्या तथा सवाल पर झुँझला उठते | हिन्दी भाषा से उन्हें विशेष लगाव और प्रेम था। वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे।

iv. कैप्टन की मृत्यु के पश्चात् हालदार साहब को इस बात का दुःख था कि अब मूर्ति पर चश्मा लगाने वाला कोई नहीं है | यह सोचकर वह निराश हो गए थे | पर मूर्ति पर किसी बच्चे के द्वारा बनाया गया सरकंडे का चश्मा देखकर नेताजी के मन की निराशा आशा में परिवर्तित हो गई | नई पीढ़ी के मन में अभी भी देशभक्तों के प्रति सम्मान की भावना है, यही सोचकर हालदार साहब द्रवित हो गए |

v. शहनाई एक ऐसा वाद्य यंत्र है जिसका प्रयोग मांगलिक विधि-विधानों में किया जाता है। दक्षिण भारत के मंगल वाद्य 'नागस्वरम्' की तरह शहनाई भी प्रभाती की मंगल ध्वनि का परिचायक है। बिस्मिल्ला खाँ शहनाई के माध्यम से मंगल ध्वनि बजाते थे और इस क्षेत्र में वे सर्वश्रेष्ठ स्थान रखते थे। इनसे बढ़कर दूसरा कोई शहनाई वादक आज तक नहीं हुआ | 15 अगस्त 1947 तथा गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 1950 को शहनाई की मंगल ध्वनि बजने वाले बिस्मिल्ला खां ही थे जिन्होंने अपनी शहनाई की गूँज से सारे भारत को गुंजायमान कर दिया था | अतः वे मंगल ध्वनि के नायक माने जाते हैं।

8. i. 'तार सप्तक' का अर्थ है सरगम के ऊँचे स्वर (किसी गीत को ऊँची आवाज में गाया जाना)।

ii. संगतकार में भी मुख्य गायक की तरह गायन-कौशल होता है, वह भी मुख्य गायक की तरह गा सकता है,परंतु ऊँचा गाने की प्रतिभा होने पर भी वह मुख्य गायक के स्वर से अपना स्वर नीचा रखकर उसका सम्मान करता है। यह उसकी कमजोरी नहीं मनुष्यता है कि वह मुख्य गायक का सम्मान करता है ।

iii. संगतकार मुख्य गायक को सुर से भटकने पर उसे पुनः मूल सुर पर ले आता है। वह उसे अकेला न होने का एहसास करा निराशा से उबार लेता है | उसके सुर में अपना सुर मिलाकर उसे पुनः गाने की प्रेरणा देता है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

i. बादल काले और घुँघराले हैं | वे भयानक गर्जना करते हुए बरसते हैं | गर्जना करते समय वे पूरे आकाश को घेर लेते हैं | काले और घुँघराले बादल देखने में कवि को बहुत सुन्दर लग रहे हैं |

ii. कवि के अनुसार फसल नदियों के जल का चमत्कार, किसानों की मेहनत, भिन्न प्रकार की मिट्टियों का गुण, हवा की थिरकन और सूरज की किरणों का रूपांतर है। इस प्रकार फसल इन सभी के सम्मलित प्रयास से साकार रूप लेती है। किसी एक के अभाव में फसल का अस्तित्व पूर्ण नहीं होता। वास्तव में फ़सल मनुष्य और प्रकृति दोनों के मिलकर कार्य करने से उपजती है।

iii. छाया छूने से कवि का तात्पर्य हैबीते दिनों की सुखद स्मृतियों को याद करने से हैं और जब मनुष्य दुखी जीवन में मीठे क्षणों को याद करता है, तब कवि ने उन क्षणों को छाया छूना कहा है। कवि इन स्मृतियों को याद करने से इसलिए मना करता है क्योंकि बीती हुई यादें मनुष्य को और दुखी बना देती हैं। इनसे मनुष्य कमजोर हो जाता है। वह बीते हुए सुखद क्षणों को याद करके अपने दुखों को और अधिक गहरा कर लेता है।

iv. लड़कियों में एक स्वाभाविक वृत्ति अपनी सुन्दरता पर रीझने की होती है। यह उनकी स्वाभाविक कमज़ोरी है। माँ अपनी पुत्री को इससे बचने और ताकतवर बनने का सुझाव देती है। माँ का मानना है कि यदि बेटी अपनी सुन्दरता पर ही मुग्ध होकर उसमें खोई रहेगी तो बाहरी खतरों के प्रति सजग नहीं रह पायेगी।

v. क्योंकि उध्दव अपने आप को निर्गुण भक्ति का सबसे बड़ा भक्त मानता था इसलिए कृष्ण जी ने सोचा कि इसे गोपियों के पास भेजते हैं और देखते हैं कि यह उन्हें निर्गुण भक्ति का संदेश दे पाते हैं या नहीं क्योंकि गोपियाँ रात-दिन सोते जागते सिर्फ उन को ही याद करती रहती है और उनके वापस आने की अवधि को आधार बना कर विरह रूपी अग्नि से अपने शरीर को जला रही है। उस रास्ते की ओर देखती रहती हैं जिधर से कृष्ण जी को वापस आना था इसलिए गोपियों की विरहग्नि को शांत करने और उनके मन को नियंत्रित करने के लिए उन्होंने उद्धव को योग का संदेश लेकर भेजा ताकि उनके व्याकुल मन को शांति मिल सके।

Section D

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

i. माता का ऑचल पाठ में ग्राम्य संस्कृति के जिस रूप का चित्रण है वह आधुनिक युग में परिवर्तित हो चुकी है। संचार माध्यम व शहरी संस्कृति के कारण वहाँ के लोगों में जीवन-शैली बदल चुकी है। वहाँ के लोग भी उन आधुनिक भौतिक साधनों से संपन्न हैं जिससे शहर के लोग संपन्न हैं। संयुक्त परिवारों का स्थान अब एकल परिवारों ने ले लिया है। मकान सिमट गए हैं। कच्ची सड़कों का स्थान अब पक्की सड़कों ने ले लिया है | गाँव में अब बिजली की भी व्यवस्था है | वहाँ के बच्चे अब मोबाइल, लैपटॉप, आइपैड का प्रयोग करने लगे हैं। खेल व खेलने की सामग्री बदल गई है। खेल व खिलौने मंहगे हो गए है। वहाँ के नागरिक आज हर क्षेत्र की जानकारी रखते है, वे परिवेश के प्रति जागरूक हैं। बैंक की सुविधा उन्हें प्राप्त है। उत्तम खाद बीज व कृषि-साधनों का प्रयोग करते है। किसान अब पढ़-लिख गया है | अपनी शिक्षा का प्रयोग वे अब खेती में करने हैं |

ii. नई दिल्ली में सब था- सिर्फ नाक न थी। नाक व्यक्ति के सम्मान का प्रतीक होती है। लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि स्वतंत्रता के बाद देश सर्वसंपन्न तो था पर केवल शारीरिक रूप से | मानसिक रूप से तो वह अभी भी उनका ही गुलाम है | अंग्रेजों को देखकर, उनसे बातें करना, उनकी जीवन-शैली को देखना न केवल उनमें हीन भावना उत्पन्न करता है बल्कि उनके अन्दर स्वाभिमान की भी कमी हो जाती है | उनमें आत्मसम्मान व स्वाभिमान की कमी थी। भारतीयों के अचेतन मन पर गुलामी की छाया का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था।

iii. पिछली गर्मियों की छुट्टियों में मुझे मनाली घूमने का अवसर प्राप्त हुआ। मेरे माता-पिता ने बताया कि यह बहुत ही खूबसूरत पर्वतीय स्थल है। यह सुनकर मेरी खुशी का ठिकाना न था। पर वहाँ पहुँच कर तो मेरी सारी आशाओं पर पानी फिर गया। मैंने सोचा था कि वहाँ चारों तरफ हरियाली और बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ होगी पर वहाँ जाकर मुझे दिल्ली जैसे नगर की भीड़-भाड़ का दर्शन हुआ। सड़कों के दोनों ओर खाने-पीने से लेकर स्थानीय सामानों की दुकानें लगी पड़ी थीं। लोगों ने खा-पीकर पानी की खाली बोतलें आदि सड़कों के किनारे ही फेंकी हुई थीं। सारा पर्वतीय स्थल छोटे-बड़े होटलों से भरा पड़ा था। पर्वतों पर पेड़ों के स्थान पर होटल-ही-होटल दिखाई पड़ रहे थे। कहीं खाने के ढाबे खुले थे तो कहीं लोगों को आकर्षित करने के लिए फेरी वाले सामान लिए पीछे-पीछे घूम रहे थे। नगर में बहती नदी मानो रोती हुई प्रदूषण की दुहाई देती हुई सी प्रतीत हो रही थी। लोगों के अतिरिक्त बोझ से पर्वतीय स्थल की खूबसूरती पोलीथीन व कूड़े-कचरे के ढेर में परिवर्तित हो गई थी। ये देख मुझे लगा कि आज मानव कितना स्वार्थी हो गया है कि अपने लाभ के लिए उस प्रकृति को नुकसान पहुंचाने में लगा हुआ है

जो हमारे लिए जीवन प्रदायिनी है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हम प्रकृति में अधिक हस्तक्षेप नहीं करें। व्यावसायिक लाभ कमाने के उद्देश्य से प्राकृतिक सौंदर्य को हानि नहीं पहुँचानी चाहिए।

12. इक्कीसवीं सदी उद्योग-व्यापार की सदी है। आज ग्लोबलाइजेशन के इस युग में "एकला चलो रे" की नीति कारगर नहीं है। हमें पूरी दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने और दुनिया में अपना वर्चस्व बनाने के लिए उद्योग-व्यापार के क्षेत्र में विकास करना होगा ।

'मेक इन इण्डिया' का शाब्दिक अर्थ है- भारत में निर्मित वस्तु। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी ने भारत को विश्व पटल पर लाने के लिए इस योजना को क्रियान्वित किया। देश औद्योगिक क्षेत्र में प्रगति करे और हर छोटी -बड़ी वस्तु का उत्पादन भारत में हों। इस पर उन्हें प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया है। 'भारत में निर्मित' अर्थात् मेक इन इण्डिया का ठप्पा जहाँ लगा हो उस पर प्रतिभा, स्किल, योग्यता का प्रयोग करते हुए चीजों का निर्माण किया जाए। केवल धन कमाना ही उद्देश्य नहीं होना चाहिए अपितु उत्पादित वस्तुओं की गुणवत्ता इतनी उच्चकोटि की हो जिससे देश का नाम सर्वत्र रोशन हो जाए। प्राचीन भारत उद्योग-व्यापार के क्षेत्र में बहुत आगे था। धन-धान्य से सम्पन्न भारत सोने की चिड़िया कहलाता था। तमाम विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत की धन सम्पत्ति को जी भर कर लूटा और धीरे-धीरे भारत पराधीनता में जकड़ गया। अंग्रेजी शासन काल में भारत उद्योग-व्यापार के क्षेत्र में इतना पिछड़ गया कि सुई तक का आयात भारत में होने लगा। परिणामतः देश आर्थिक दृष्टि से खोखला होता चला गया। स्वतंत्रता के उपरान्त देश ने हर क्षेत्र में तरक्की की है। आज भारत के युवा विदेशी संस्थानों में उच्चपदों पर कार्यरत हैं साथ ही देश कम्प्यूटर साफ्टवेयर के क्षेत्र में विश्व के अग्रणी देशों में हैं। भारतीय संस्थाओं ने अन्तरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में बहुत तरक्की की है। इसरो ने मंगलयान को मंगल की कक्षा में सफलतापूर्वक पहुँचाया हैं तथा हम पी.एस.एल.बी राकेट के द्वारा तमाम देशों के उपग्रहों को अन्तरिक्ष में स्थापित करने में सफल रहे हैं।

हमारे प्रधानमंत्री चाहते हैं कि देश में विदेशी पूँजी का आगमन हो जिसमें 'मेक इन इण्डिया' प्रोग्राम गति पकड़ ले और भारत में निर्मित वस्तुएँ हर क्षेत्र में अपनी गुणवत्ता के लिए जानी जाएँ। युवा प्रतिभाओं को भी अवसर मिलें , कठिन परिश्रम, अनुशासन से यह संभव है। आज हम संभव प्रयास कर प्रधानमंत्री के इस सपने को साकार करने में अपना योगदान दें।

OR

भूमिका:- मैच चाहे फुटबॉल का हो या क्रिकेट का हो, हर व्यक्ति के मन में आनंद का संचार करता है | उसे देखकर मन प्रसन्न और उत्साहित हो जाता है | अभी पिछले दिनों मुझे डी.ए.वी. और आर.बी.एस. के मध्य हुए रोमांचक फुटबॉल मैच को देखने का मौका मिला | **टीमों का मैदान में आना:-** मैं नियत दिन पर निश्चित समय से पहले ही स्टेडियम पहुँच गया | सारा स्टेडियम खेलप्रेमी दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था | निश्चित समय से पाँच मिनट पहले दोनों टीमें पूरी सज-धजकर पंक्तिबद्ध होकर मैदान में उतरीं। डी.ए.वी. की टीम हरी शर्ट और सफेद नेकर और आर.बी.एस. की टीम लाल कमीज तथा पीली नेकरों में थी। दर्शकों ने गर्मजोशी से तालियाँ बजाकर उनका स्वागत किया।दोनों टीम के सभी खिलाड़ी बड़े ही उत्साहित लग रहे थे | सभी खिलाडियों ने दर्शकों को हाथ हिलाकर उनके स्वागत का ज़वाब दिया | **मैच का संघर्षपूर्ण आरम्भ:-** ठीक पाँच बजे निर्णायक ने लंबी सीटी बजाई। निर्णायक ने गेंद को मध्यरेखा के पास ऊपर उछाला और मैच प्रारम्भ हो गया। खेल में शुरू में ही गति आ गई। आर.बी.एस. के खिलाड़ियों ने गेंद सँभाली। लंबे पास देते हुए वे

चर ही पासों में डी.ए.वी. दल के गोल क्षेत्र में पहुँच गए। अगले ही क्षण उन्होंने डी. ए. वी. के गोल पर धावा बोल दिया। वहाँ के क्षेत्ररक्षकों ने खूब हाथ-पाँव मारे किंतु आर. बी. एस. के भट्टाचार्य और वासुदेव ऐसे कुशल खिलाड़ी थे कि उन्होंने फुटबॉल को अपने नियंत्रण से छिनने नहीं दिया। वासुदेव ने गोल के अंदर किक मारी । किक सटीक थी। गोल होने ही वाला था कि गोलची के हाथ के धक्के से गेंद उछलकर गोल के ऊपर से निकल गई। इस प्रकार आर. बी. एस. दल का वह सुंदर आक्रमण गोलची के कुशल रक्षण से निष्फल हो गया। दोनों ही टीमों के खिलाडियों द्वारा खेल बड़ा ही रोमांचक तरीके से खेला जा रहा था | **दूसरे दल का आक्रमण:-** गोलची ने फुटबॉल को किक लगाई, जो आकाश को छूती हुई-सी सीधे आक्रामक खिलाड़ी किशोर के पास जा पहुँची। आर. बी. एस. के गोल में किशोर को तीन खिलाड़ी घेरे हुए थे। जल्दी में किशोर ने निशाना दागा, जो कि आर. बी. एस. के खिलाड़ी द्वारा बाधित होकर व्यर्थ कर दिया गया। अतः बिना किसी गोल के मध्यांतर हो गया। **डी.ए.वी. के दो गोल:-** मध्यांतर के उपरांत दोनों दलों के गोल परस्पर बदल गए। खेल प्रारंभ होते ही डी. ए. वी. के किशोर, महेन्द्र और अशोक की तिकड़ी ने वह धावा बोला कि आर. बी. एस. का गोलची घबरा उठा। महेंद्र की सधी हुई किक से गोल होने ही वाला था कि चटर्जी ने उसे गलत ढंग से रोका। परिणामस्वरूप उन्हें पैनल्टी किक मिली, जिसे कुटप्पन ने अपने सधे हुए निशाने से गोल में बदल दिया। तालियों की गड़गड़ाहट से सारा स्टेडियम गूंज उठा। फुटबॉल फिर मध्य से उछाली गई। अब की बार फिर डी. ए. वी. के खिलाड़ी आक्रमण पर थे। क्षेत्र-रक्षकों ने उन्हें रोका किंतु उनकी बिजली-सी गति को वे रोक नहीं पाए और अशोक ने एक और गोल कर दिया। यह फील्ड गोल था। इस तरह मैच रोमांचक होता जा रहा था और दर्शकों के हृदय की धड़कन भी बढ़ती जा रही थी | **रोमांचक अंत:-** दो गोल खाने के बाद आर. बी. एस. के खिलाड़ियों का मानो पौरुष जाग गया और बिना कोई मौका गवाएँ वे फुटबॉल पर बुरी तरह पिल पड़े। उधर डी. ए. वी. ने रक्षक नीति अपनाई। मैच समाप्त होने से पाँच मिनट पहले आर. बी. एस. ने एक गोल उतार दिया। मैच में पुनः रंग आ गया। दर्शकों की धड़कनें अति तीव्र हो गईं। अब मैच बड़े ही रोमांचक मोड़ पर पहुँच चुका था | आर. बी. एस के खिलाड़ियों ने अपनी पूरी जान लगा दी परंतु उन्हें 2-1 से हारकर संतोष करना पड़ा। अंत में विजयी हुई डी.ए.वी. टीम के कैप्टन और खिलाडियों को सम्मानित किया गया |

OR

प्रकृति की रमणीयता और उसका नैसर्गिक सौन्दर्य बरबस ही हमारे मन को मोह लेता है। सुखद अहसास दिलाने वाली प्रकृति का दानव स्वरूप भी है जिसके धारण कर लेने पर चारों ओर सिर्फ विनाश होता है। बाढ़, भूकम्प, तूफान, ज्वालामुखी विस्फोट, सूखा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बादलों का फटना ये सभी प्रकृति के दानव स्वरूप के प्रतिरूप हैं। प्रकृति के प्रकोप का जिम्मेदार मनुष्य ने ही प्रकृति को अपना सुकुमार और नैसर्गिक रूप त्याग करके दानव रूप धारण करने के लिए विवश किया है। मनुष्य प्रारम्भ से ही अपनी सुख-सुविधाओं के लिए प्राकृतिक उपादानों का प्रयोग करता रहा है पहले वह प्रकृति से छेड़छाड़ नहीं करता था प्रकृति उसे जो स्वेच्छा से देती थी मनुष्य उसे स्वीकार कर लेता था जब मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ने लगी तो उसने प्रकृति के उपादानों का प्रयोग करने के अलावा उससे छेड़छाड़ करना भी आरम्भ कर दिया।।

कारखानों-वाहनों के धुएँ ने वायु को, गन्दे रासायनिक तत्वों और गन्दे मल-युक्त जल को स्वच्छ नदियों में मिलाकर जल को दूषित कर दिया। आधुनिक तकनीक से विकसित उपकरणों ने मनुष्य को जहां राहत प्रदान की है वहीं प्रकृति को खोखला बना दिया है। मौसम चक्र परिवर्तित हो गये, धरती का तापमान निरंतर बढ़ने से सर्दियों में आसमान में फैलने

वाली धुंध की चादर का स्थान आज प्रदूषण से ढके बादलों ने ले लिया है ऐसे वातावरण ने हृदय ,श्वास संबंधी बीमारियों को जन्म हुआ ।

परिणामस्वरूप प्रकृति ने भी अपने सुकुमार रूप को त्यागकर दानव रूप धारण कर लिया और अब सबको सबक सिखाने के लिए चारों ओर विनाश करती है। जिसका जीता-जागता उदाहरण उत्तराखण्ड त्रासदी हैं।

यदि मनुष्य प्रकृति के इस प्रकोप से बचना चाहता है तो उसे सोच-समझकर प्रकृति के उपादानों का प्रयोग करते हुए प्रकृति के संतुलन को कायम रखना होगा। इसके लिए जनसंख्या के बढ़ते स्तर को घटाना होगा। हम अधिकाधिक वृक्ष लगाएँ, जल और वायु को दूषित होने से रोकें और प्रकृति के तंत्र के साथ छेड़-छाड़ न करें। पर्यावरण संरक्षण के लिए जन-जागृति के कार्यक्रम चलाये जाए, वृक्षारोपण, जल संसाधनों की सफाई, कूड़े-कचरे का सही रूप से निस्तारण, जैसी आदतों का विस्तार करना होगा तभी प्रकृति को सुरक्षित रख सकते हैं।

13. सेवा में,

डाक अधीक्षक,

डाकघर साध नगर,

पालम,

नई दिल्ली

विषय- आवश्यक डाक संभालने के संदर्भ में

मान्यवर,

प्रार्थना है कि मैं बी ब्लॉक 6, साध नगर,पालम नई दिल्ली का निवासी हूँ। मैं अपने इस पत्र के माध्यम से आपको अवगत करना चाहता हूँ कि मैं परिवार सहित जरूरी कार्य से एक महीने के लिए दिल्ली से बाहर जा रहा हूँ। इसी मध्य मेरी कुछ अति आवश्यक डाक आने की संभावना है जो निश्चित रूप से आपके डाकखाने में आयेगी जिसे मैं आपसे उस समय प्राप्त करने में असमर्थ रहूँगा | अत: आप पहली फरवरी से 28 फरवरी तक उस डाक को संबन्धित डाकिये की जानकारी में अपने डाकघर में सँभालकर रखियेगा। जब मैं 28 फरवरी के बाद घर वापस आऊँगा | तब मैं डाकघर आकर वहाँ से अपनी डाक प्राप्त कर लूँगा। आपकी बड़ी कृपा होगी।

सधन्यवाद

विकास गुप्ता

बी ब्लॉक 6, साध नगर,

पालम नई दिल्ली

दिनांक : 17 जनवरी, 2019

OR

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

डी.ए.वी. स्कूल (विद्यालय)

द्वारका-6, दिल्ली

विषय- रंगमंच प्रशिक्षण हेतु कार्यशाला का आयोजन

श्रीमान् जी,

सविनय निवेदन है कि मैं इस वर्ष ग्रीष्मावकाश में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से रंगमंच प्रशिक्षण के लिए दस दिवसीय एक कार्यशाला का आयोजन विद्यालय परिसर में करने की अनुमति चाहता हूँ। रंगमंच एक ऐसा माध्यम है जो न केवल हम छात्रों के विचारों को एक दिशा प्रदान करेगा बल्कि उन्हे भविष्य के लिए भी निर्देशित करेगा । इससे होने वाले लाभों से मैं आपको परिचित कराना चाहता हूँ।

रंगमंच का प्रशिक्षण लेने से छात्रों के व्यक्तित्व का विकास होने के साथ ही उसकी दबी छिपी प्रतिभा को निखरने का अवसर प्राप्त होगा तथा छात्र अभिनय व कला द्वारा अन्तर्निहत शक्तियों को अभिव्यक्त करने में भी समर्थ होंगे। इसके साथ-साथ कुछ उच्छृंखल छात्रों को भी एक दिशा मिल जाएगी और इससे वे अपना समय इधर-उधर व्यतीत न कर एक उद्देश्यपूर्ण कार्य में लगायेगें व समय का सदुपयोग करेंगे।

अतः आपसे प्रार्थना है कि आप शीघ्रातिशीघ्र इस कार्यशाला का आयोजन करने की अनुमति प्रदान करें ताकि हम इस योजना को क्रियान्वित कर सकें।

सधन्यवाद !

प्रार्थी

गौरव

अनु. 32 दशमें क

डी.ए.वी. विद्यालय

द्वारका-6, दिल्ली

17 जनवरी, 2019

14.

क्या आप रसोई गैस की किल्लत से परेशान हैं? क्या गैस आपके बजट को गड़बड़ा रहा है? आज ही खरीदें:-

इंडोर इंडक्शन चूल्हा

अब गैस की आधी कीमत से भी कम खर्च।

50% तक बिजली बचाएँ। प्रारंभिक मूल्य सिर्फ 1999/- सात दिनों में फ्री होम डिलीवरी कॉल करें- 1800-02XXXX

OR

ठंडा मतलब----------? कोका कोला

कोका कोला पीजिए

जिन्दगी का आनन्द लीजिए।

"बच्चों, जवान व बूढ़ों को भाये।
गर्मी भगायें।"